समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।
संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२४ ● वर्ष : २८ ● अंक : ०२ (निरंतर अंक : ३२६) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य बापूजी के सद्गुरु
साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

पूज्य बापूजी का आत्मसाक्षात्कार दिवस
४ अक्टूबर

जब सद्गुरु की कृपा बरसी तब दिखा कि सब जगह तू-ही-तू है । गुरुदेव ने दिल में ही वह दिलबर दिखा दिया । - पूज्य बापूजी

अहमदाबाद

पंचेड़, जि. रतलाम

गुरुपूर्णिमा पर आश्रमों में उमड़ी जनमेदिनी, दिखे श्रद्धा-भक्ति के अद्भुत नजारे

क्लेशकारक और क्लेशनाशक संकल्प

- पूज्य बापूजी

जहाँ दुःख की गंध नहीं, जहाँ सुख की गुलामी नहीं, जहाँ जन्म और मृत्यु की पीड़ा नहीं, जहाँ शोक-मोह की दाल न गले, हम ऐसे पद को पायें प्रभु !

आप अपने संकल्प में क्लेशकारक संकल्प जोड़-जोड़कर क्लेश कब तक भोगोगे ? तो अपने संकल्पों में क्लेशनाशक संकल्प डाल दो । कौन-सा क्लेशनाशक संकल्प ? कि 'मैं कौन हूँ ? यह ठीक से जान लूँ अथवा ईश्वर को पा लूँ अथवा मोक्ष को पा लूँ, ऐसी स्थिति पा लूँ कि जहाँ से पतन न हो ।' है एक-का-एक, नाम अनेक हैं। वह प्राप्त करो कि छूटे नहीं। जहाँ दुःख की गंध नहीं, जहाँ सुख की गुलामी नहीं, जहाँ जन्म और मृत्यु की पीड़ा नहीं, जहाँ शोक-मोह की दाल न गले, चिंता और भय से चकनाचूर होने का जहाँ नाम नहीं, पराधीनता का जहाँ 'प' भी नहीं, हम ऐसे पद को पायें प्रभु ! तो आप संकल्प करेंगे फिर गुरु का संकल्प जुड़ेगा और लगे रहेंगे तो पूरा हो जायेगा।

क्लेशकारक संकल्प देखनेभर को तो अच्छे लगते हैं फिर क्लेश ही मिलते हैं। 'मैं शादी करूँगा, बड़ा सुखी हो जाऊँगा ।' थोड़ी देर तो लगा कि मजा आया लेकिन क्लेश-ही-क्लेश तो मिला। 'मैं दारू पीऊँगा, मजा आयेगा; तलाक दूँगा, मजा आ जायेगा; दूसरी पत्नी करूँगा, मजा आ जायेगा; दूसरा पति करूँगी, मजे से रहूँगी; मैं अकेली हूँ मेरे को जीवनसाथी चाहिए...' अरे जीवनसाथी तो वास्तव में वही परमात्मा है, अब दूसरा जीवनसाथी ढूँढ़-ढूँढ़ के फिर क्लेश काहे को पैदा करती है ?

जीवनसाथी मिल जाय, जीवन-साथिन मिल जाय, सेठ मिल जाय, साहूकार मिल जाय, फलाना मिल जाय... ये सब क्लेशकारक संकल्प हैं। हमें तो वह मिल जाय कि जिसकी सत्ता से सृष्टि की उत्पत्ति होती है, पालन होता है और जिसमें सब विलय होते हैं और फिर भी जो ज्यों-का-त्यों रहता है मुझे वह (परमात्मा) मिल जाय बस ! एक (परमात्मा) मिल जाय बस और कुछ नहीं चाहिए । परमात्मा सच्चा जीवनसाथी है, उसको पाने का संकल्प करो।

रजि. समाचार पत्र

लोक कल्याण सेतु

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २८ अंक : २
निरंतर अंक : ३२६ आवधिकता : मासिक
प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२४ मूल्य : ₹४.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ६१२१०७३९

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹४५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹८०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹१९५		
(४) आजीवन :	₹४७५		

❊ विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ❊

अनादि	DIGIANA DIVYA JYOTI		सेवाकार्य भी	
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे	रोज रात्रि १० बजे	Asharamji Bapu	Asharamji Ashram	Mangalmay Digital
		यूट्यूब चैनल्स		

❊ 'अनादि' चैनल टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है। ❊ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

लोक कल्याण सेतु ई-मैगजीन के रूप में भी पढ़ सकते है। ई-मैगजीन अथवा हार्ड कॉपी के सदस्य बनने के लिए क्लीक करो...

www.lokkalyansetu.org

● लोक कल्याण सेतु रुद्राक्ष मनका योजना : ●

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

इस अंक में...

● **तुम्हारा 'आसोज सुद दो दिवस' कब आयेगा ?**

कवर स्टोरी | जितना हो सके आप लोग मौन का सहारा लेना। बोलना पड़े तो बहुत धीरे बोलना और बार-बार अपने मन को समझाना कि 'तेरा आसोज सुद दो दिवस (आत्मसाक्षात्कार दिवस) कब होगा ? ४

● ईश्वर की अमूल्य निधि – स्वामी मुक्तानंदजी.................६
● प्रतिकूलता में भी प्रसन्नता.......................................७
● शैक्षणिक संस्थानों में सनातन धर्म विरोधी गतिविधियाँ करनेवालों के खिलाफ हुई कड़ी कार्यवाही.............. ८
● अखंड आनंद प्राप्त करने का एकमात्र उपाय....................९
● महात्मा गांधी की सेवानिष्ठा और सूझबूझ.................... १०
● जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि.......................................१२
● उपकरणों का पूजन क्यों ?.....................................१३
● बापूजी को मिले न्याय, हो तत्काल रिहाई.....................१४
● २०५० तक सम्भवतः आधी जनसंख्या होगी मायोपिया से ग्रस्त : रिपोर्ट – धीरज चव्हाण............ १६
● औषधीय गुणों से भरपूर करेले का ऐसे उठायें लाभ........... १८
● मुझ भूले-भटके को मिली सही राह – बाजीराव शंकर मादले...........................२०
● हे अंतर्यामी भगवान ! – संत पथिकजी.......................२१
● मनाया गया गुरुपूर्णिमा का पावन पर्व.........................२३
● आपत्तियों से बचने और सफलता पाने के साधन..............२४

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम | **प्रकाशक और मुद्रक :** राकेशसिंह आर. चंदेल | **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) | **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५ | **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी

Email: lokkalyansetu@ashram.org, ashramindia@ashram.org Website: www.lokkalyansetu.org, www.ashram.org

४ अक्टूबर :
पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस पर विशेष

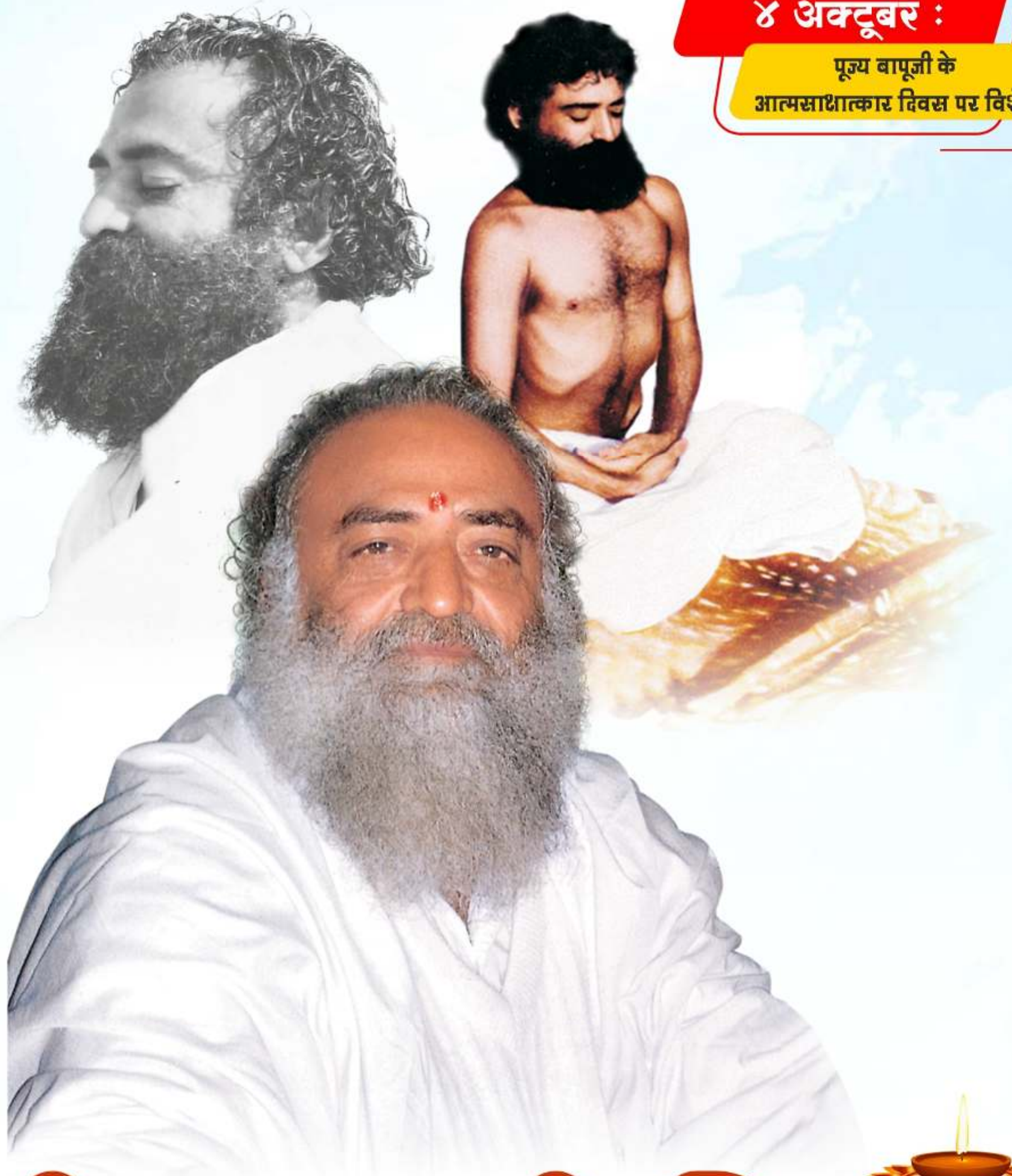

तुम्हारा आसोज सुद दो दिवस कब आयेगा ?

(पूज्य बापूजी की ज्ञानमयी अमृतवाणी)

जितना हो सके आप लोग मौन का सहारा लेना। बोलना पड़े तो बहुत धीरे बोलना और बार-बार अपने मन को समझाना कि 'तेरा आसोज सुद दो दिवस (आत्मसाक्षात्कार दिवस) कब होगा ? ऐसा क्षण कब आयेगा कि जिस क्षण तू परमात्मा में खो जायेगा ? ऐसी घड़ियाँ कब आयेंगी कि तू सर्वव्यापक, सच्चिदानंद परमात्मस्वरूप हो जायेगा ? ऐसी घड़ियाँ कब आयेंगी कि जब तू निःसंकल्प

शैक्षणिक संस्थानों में

सनातन धर्म विरोधी गतिविधियाँ

करनेवालों के खिलाफ हुई कड़ी कार्यवाही

पिछले दिनों देश के कुछ कॉन्वेंट स्कूलों द्वारा भारतीय संस्कृति के देवी-देवताओं, परम्पराओं एवं शास्त्रों को तिरस्कृत करने की घटनाएँ सामने आयीं, जिनका सजग एवं संस्कृतिप्रेमी समाज द्वारा पुरजोर विरोध किया गया।

❋ उत्तर प्रदेश के बलिया के सेंट मैरी स्कूल में एक अध्यापक ने एक छात्र की शिखा काट दी और उसे विद्यालय में तिलक लगाकर आने से मना किया। बच्चे की धार्मिक स्वतंत्रता पर किये गये कुठाराघात एवं हिन्दू धर्म के अपमान का प्रतिकार करने जब उसकी माँ विद्यालय पहुँची तो प्रधानाचार्य द्वारा अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया। बच्चे के पिता ने एफ.आई.आर. दर्ज करायी और हिन्दू संगठनों द्वारा विद्यालय के खिलाफ कार्यवाही की माँग की गयी, जिसके चलते प्रधानाचार्य व अध्यापक के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया।

❋ कर्नाटक के मंगलुरु में सेंट गेरोसा हाई स्कूल की एक शिक्षिका ने बच्चों को पढ़ाते समय महाभारत और रामायण को 'कल्पित' व भगवान राम को 'पौराणिक व्यक्ति' बताने की अपमानजनक टिप्पणी की। बच्चों के माता-पिता द्वारा शिक्षिका और विद्यालय-प्रबंधन के खिलाफ शिकायत दर्ज करके पुलिस को बताया गया कि शिक्षिका ने यह सब बच्चों के मन में हिन्दू धर्म के प्रति नफरत पैदा करके उन्हें ईसाइयत में

उपकरणों का पूजन क्यों ?

औजारों का पूजन सनातन संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है जो मनुष्य और उसके द्वारा बनाये गये उपकरणों के बीच के संबंध को दर्शाता है । हथियार, पुस्तकें, गाड़ियाँ, घरेलू उपकरण आदि की पूजा प्राचीन काल से होती आ रही है । उपकरणों का पूजन करके लोग उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जो उन्हें अपना जीवन-यापन करने और अपनी जरूरतों को पूरा करने में मदद करते हैं।

इसके उद्देश्य के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है : ''एक दिन सुबह मेरे निवास के पास माली और बढ़ई लोग अपने कुदाली, रंदों और हँसियों की पूजा कर रहे थे।

मेरा चित्त प्रसन्न हुआ । मैंने कहा : ''चलो मैं तुम्हारी पूजा करवा देता हूँ।'' कुमकुम लेकर और वैदिक मंत्र पढ़ के हमने उनकी पूजा करवा दी।

अपने साधन की पूजा करो क्योंकि साधन से अपने साध्य को संतुष्ट करना है । हँसिया होगा ५०-१०० रुपये का, वह कोई भगवान तो नहीं है। रंदा होगा १००-१५० रुपये का तो उसकी पूजा क्यों ?

भारतीय संस्कृति जानती है कि तुम अपने कर्म

2050 तक सम्भवतः आधी जनसंख्या होगी मायोपिया से ग्रस्त : रिपोर्ट

मोबाइल फोन, टी.वी., कम्प्यूटर, लैपटॉप आदि के अत्यधिक प्रयोग के चलते लोग विभिन्न स्वास्थ्य-समस्याओं से ग्रस्त हो रहे हैं।

नेत्र-विशेषज्ञों का कहना है कि मोबाइल फोन आदि की स्क्रीन पर अधिक समय तक देखते रहने से आँखों की पुतलियों का आकार बढ़ जाता है, जिससे व्यक्ति 'निकट दृष्टि दोष (myopia)'

नामक नेत्ररोग का शिकार हो जाता है। इसमें निकट की वस्तुएँ तो स्पष्ट रूप से दिखती हैं परंतु नेत्रज्योति क्षीण होने से दूर की वस्तुएँ धुँधली दिखाई देती हैं। नेत्रज्योति-क्षीणता की समस्या विशेषकर बाल व युवा पीढ़ी को अपनी चपेट में ले रही है, जिसके चलते उन्हें असमय चश्मा लग जाता है।

हाल ही में यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू साउथ वेल्स, ऑस्ट्रेलिया की वेबसाइट पर स्वास्थ्य-विशेषज्ञों द्वारा इससे संबंधित जानकारी प्रकाशित की गयी। उसके अनुसार 'मायोपिया से ग्रस्त लोगों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। हालाँकि चश्मे आदि द्वारा इस रोग की प्रगति को धीमा किया जा सकता है परंतु जब यह रोग गम्भीर रूप धारण

औषधीय गुणों से भरपूर करेले का ऐसे उठायें लाभ

विटामिन ‘ए’, ‘बी २’, ‘बी ३’, ‘बी ९’, ‘सी’ जैसे पोषक तत्त्व...

रक्त को शुद्ध करनेवाला, सूजन को मिटानेवाला, विषनाशक...

मधुमेह में अद्भुत लाभ, इससे रक्त-शर्करा कम होती है...

पचने में हलका, भूख बढ़ानेवाला, कफ-पित्तशामक...

निर्दोष संत आशारामजी बापू को न्याय मिलना चाहिए। उन्हें तत्काल बाहर करना चाहिए।

- स्वामी आनंदस्वरूप, अध्यक्ष, शंकराचार्य ट्रस्ट, बेंगलुरु

१००% शुद्ध व ऑर्गेनिक भीमसेनी कपूर

✲ औषधीय प्रयोग हेतु यह सर्वोत्तम कपूर है। ✲ नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने और वातावरण को शुद्ध करने के लिए भीमसेनी कपूर का उपयोग श्रेष्ठ बताया गया है।

१००% शुद्ध शहद

खनिज तत्त्वों एवं विटामिन्स से भरपूर यह शहद एक प्राकृतिक संजीवनी है। यह वर्ण को निखारनेवाला, नेत्रज्योति व बल वर्धक एवं शरीर को पुष्ट करनेवाला और पेट साफ करनेवाला है।

चिरयौवन, दीर्घायुष्य प्रदायक व मातृ-दुग्धवर्धक शतावरी चूर्ण

यह बल, वीर्य व बुद्धि वर्धक, चिरयौवन व दीर्घायुष्य देनेवाली, वजन बढ़ाने में मददरूप, नेत्र एवं हृदय के लिए हितकर तथा रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ानेवाली श्रेष्ठ औषधि है। इसका नियमित सेवन सामान्य कमजोरी, दुर्बलता, वीर्य-संबंधी बीमारियों, अत्यधिक मासिक स्राव, वंध्यत्व आदि रोगों में लाभदायी है। इसके सेवन से प्रसूति के बाद दूध खुलकर आता है।

रोगी-निरोगी सभीके लिए शक्ति, स्फूर्ति, दीर्घायु प्रदायक रसायन चूर्ण

यह शक्ति, स्फूर्ति, ताजगी तथा दीर्घ जीवन देनेवाला है। पुराना बुखार, वीर्यदोष, मूत्रसंबंधी रोग, स्वप्नदोष आदि में लाभदायी है। यह बढ़ती उम्र के साथ आनेवाली कमजोरी एवं रोगों से रक्षा करता है। रोगी-निरोगी सभी इसे ले सकते हैं। निरोगता व दीर्घ आयुष्य हेतु ४० वर्ष की उम्र के बाद इसका सेवन विशेषरूप से करना चाहिए।

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी आँवला रस

यह वीर्यवर्धक, त्रिदोषशामक व गर्मीशामक है। इसके सेवन से आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों में लाभ होता है।

लीवर टॉनिक सिरप व टेबलेट

सभी प्रकार के यकृत-विकार (liver disorders), खून की कमी, पीलिया, रक्त-विकार, कमजोरी, भूख न लगना, अरुचि, कब्ज, पेटदर्द तथा गैस में अत्यधिक लाभप्रद है।

आम की गिरी (मींगी) का मुखवास पाचक व भूखवर्धक

पोषक तत्त्वों से भरपूर यह मुखवास स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक विटामिन B12 की कमी को दूर करता है। छाती में जलन, उलटी, जी मिचलाना, कृमि आदि समस्याओं में भी लाभदायी है।

गुटखा, तम्बाकू आदि का व्यसन छुड़ाने के लिए यह मुखवास लेना हितकर है।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

देश-विदेश में उमड़ा जनसैलाब, गुरुपूजन - पादुका पूजन, मानस पूजन कर मनायी गुरुपूर्णिमा

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

लोक कल्याण सेतु के सम्मेलन एवं अभियान... सदस्यता दिलाकर पाया स्पर्शित प्रसाद

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक :** राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी